ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

# प्रोक्तीय दृष्टि से निराला और पंत के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन

KEY WORDS:

**डॉ. कृष्णा देवी** एम.ए. (पंजाबी), एम.ए. (हिन्दी) पी–एच.डी.(हिन्दी) पत्नी श्री सुनील कुमार

'शैलीविज्ञान' जैसी नवीन अवधारणा को समझने के लिये 'शैली के विषय में पर्याप्त जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है। साधारण शब्दों में शैली का अर्थ है–ढंग या तरीका। जैसे खाने–पीने, बोलने, लिखने आदि का ढंग। शैली शब्द को लेकर अनेक पाश्चात्य तथा भारतीय विचारकों में मतभेद रहा है। कुछ विचारक 'शैली' को पाश्चात्य मानते हैं तो कुछ इसे प्राचीन भारतीय साहित्य से जोड़ते हैं।

**डॉ. भोलानाथ तिवारी के शब्दों में**–'स्टाइल' शब्द भारोपीय परिवार की भाषाओं में अपने मूल रूप में काफी पुरानी है। अवेस्ता में 'स्टएर', ग्रीक में 'स्ताइलोस' तथा लैटिन में 'स्टाइलुस' आदि रूपों में देखा जा सकता है।[2]

शैलीविज्ञान शैली के वैज्ञानिक अध्ययन–विश्लेषण को कहा जाता है।

**डॉ. नगेन्द्र के शब्दों में**–शैलीविज्ञान साहित्यिक शैली अर्थात् कलात्मक भाषिक विज्ञान का अध्ययन है।[1] इसके अतिरिक्त शैलीविज्ञान के नामकरण, उपयोगिता रूप–विवेचन, शाखाएँ, अनुप्रयोग, प्रक्रिया, अध्ययन–पद्धतियों पर विचार–विमर्श किया गया है। अन्त में शैलीविज्ञान का भाषाविज्ञान, साहित्यशास्त्र, सौन्दर्यशास्त्र, मनोविज्ञान, दर्शन–शास्त्र, समाजशास्त्र, काव्यशास्त्र और व्यावहारिक समीक्षा से सम्बन्ध बताया गया है।

शैली–वैज्ञानिक अध्ययन–विश्लेषण के अन्तर्गत 'प्रोक्ति' का विशेष महत्त्व होता है। प्रोक्ति को शैली के विभिन्न तत्त्वों में से एक महत्त्वपूर्ण अभिकरण स्वीकार किया जाता है। ये वाक्य से भी बड़ी इकाई है। वास्तव में प्रोक्ति एक प्रकार का वाक्य समूह है। प्रोक्ति कुछ वाक्यों का समूह भी हो सकता है या पूरी कृति भी। प्रोक्ति का अर्थ, स्वरूप व परिभाषा को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है।

**प्रोक्ति : अर्थ व परिभाषा :**
'प्रोक्ति' शब्द दो शब्दों के मेल से बना है–प्र+उक्ति। 'प्र' का अर्थ है–परिष्कृत अथवा श्रेष्ठ तथा उक्ति का अर्थ है–'कथन'। इस प्रकार प्रोक्ति का शाब्दिक अर्थ हुआ–'श्रेष्ठ कथन'। प्रोक्ति ऐसे सुगठित वाक्यों की इकाई है जिसके द्वारा वक्ता अपने मनोभावों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करता है।

'प्रोक्ति' के लिये अंग्रेजी में दो शब्दों का उपयोग किया जाता है–डिस्कोर्स तथा अटरैन्स। डिस्कोर्स भाषाविज्ञान का पारिभाषिक शब्द है तथा अटरैन्स सामान्य शब्द है। काफी समय से वाक्य को ही भाषा की महत्त्वपूर्ण तथा बड़ी इकाई माना जाता रहा है। परन्तु आधुनिक भाषा–वैज्ञानिकों ने वाक्य से भी बड़ी इकाई की कल्पना की है। इसी संकल्पना का नाम 'प्रोक्ति' है। 'प्रोक्ति' की संकल्पना शैलीविज्ञान की ही देन है जिसकी सर्वप्रथम चर्चा एम.ए. हैलिडे ने की।[3]

**प्रोक्ति के प्रकार :**
अभिव्यक्ति के आधार पर प्रोक्ति दो प्रकार की होती है–एकालाप तथा संलाप। एकालाप–अपने मन के भावों को अभिव्यक्त करने के लिये जब व्यक्ति अपने आप से ही वार्तालाप करने लगता है, तो उसे एकालाप कहा जाता है। इसके अंतर्गत श्रोता व वक्ता की भूमिका एक ही व्यक्ति निभाता है।

**संलाप** – इसके अंतर्गत वक्ता और श्रोता का परस्पर किया जाने वाला संवाद प्रस्तुत किया जाता है।

अभिव्यक्ति के अंतर्गत संसक्ति का विशष महत्त्व होता है। संसक्ति का अर्थ है–'जुड़ाव'। पाठ–निर्माण भी इसी संसक्ति के आधार पर किया जाता है। यदि पाठ में जुड़ाव अर्थात् संसक्ति नहीं होगी तो वह प्रोक्ति की संज्ञा प्राप्त नहीं कर सकता।

**क) संसक्ति के आयाम :**
संसक्ति दो प्रकार की होती है–
1. सीानिक
2. सार्वत्रिक
संसक्ति के इन दो आयामों के अतिरिक्त इनके आगे उप–भाग भी बताये गये हैं। इन्हीं के आधार पर महाकवि निराला और कविवर पंत के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन–विश्लेषण किया जा सकता है।

**1. स्थानिक संसक्ति :**
स्थानिक संसक्ति व्याकरणिक इकाइयों से जुड़ी संसक्ति को कहा जाता है। इसके आगे तीन भाग किये गये हैं–

**क) सांकेतिक संसक्ति :**
जिस प्रोक्ति के अंतर्गत वाक्य निर्देशक–तत्त्वों तथा सर्वनामों द्वारा जुड़े होते हैं, वो सांकेतिक संसक्ति कहलाती है। महाकवि निराला और कविवर पंत के काव्य में ये विशेषता सरलता से देखी जा सकती है।

निराला–कृत 'गीतिका' की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं–

'मुझे तुमने ये वचन दिये
तुम्हीं हृदय के सिंहासन के
मेरे मरण और जीवन के
मेरी वीणा के तारों में
मेरे तप के तुम्हीं अमर वर
मेरी तृष्णा के करुणाकर।'[4]

यहाँ निराला जी ने सर्वनामों का उपयोग यथास्थान पर किया है। पंत–कृत कुछ पंक्तियाँ भी द्रष्टव्य हैं–

'धरे पुरुष के संग उसने पग
रंग तरंगित जिसकी श्री से।'[5]

यहाँ पंत जी ने सर्वनामों का उपयोग वाक्यों के अंत में किया है। निराला जी अपेक्षा पंत जी ने ऐसे प्रयोग अधिक किये हैं।

**ख) शाब्दिक संसक्ति :**
इसके अंतर्गत पाठांश विलोम, पर्याय शब्दों, विराम चिह्नों द्वारा जुड़े होते हैं। इस प्रकार की प्रवृत्ति महाकवि निराला और पंत के काव्य–संसार में समान रूप से देखी जा सकती है। दोनों महाकवियों ने अनेक स्थलों पर विलोम, पर्यायवाची शब्दों तथा विराम–चिह्नों का सुन्दर उपयोग करके अपने मनोभावों को सुन्दर अभिव्यक्ति प्रदान की है। निराला–कृत कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं जिनमें उपर्युक्त समस्त प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं–

'भ्रमर का गुंजार,
वह भी स्वाधीन,
पक्षियों का कलरव,
वह भी स्वाधीन,
उदय–अस्त दिनकर का।'[6]

इस काव्यांश में 'गुंजार' व 'कलवर' पर्याय शब्दों तथा 'उदय–अस्त' विलोम शब्दों का उपयोग होने के कारण शाब्दिक संसक्ति का गुण उत्पन्न होता है।

**ग) संयोजनपरक संसक्ति :**
इस संसक्ति के अंतर्गत किसी भी साहित्यिक कृति का वाक्यीय और अन्तर्वाक्यीय स्तर पर अध्ययन–विश्लेषण किया जाता है। इसमें यह देखा जाता है कि–मिश्र, संयुक्त व उपवाक्य किस प्रकार परस्पर जुड़कर प्रोक्ति का निर्माण करते हैं। पिछले अध्यायों में महाकवि निराला और कविवर पंत के वाक्यों का अध्ययन–विश्लेषण प्रस्तुत किया जा चुका है।

**2. सार्वत्रिक संसक्ति :**
सम्पूर्ण रचना को एक सूत्र में पिरोने वाली संसक्ति को सार्वत्रिक संसक्ति कहा जाता है। इस प्रकार की संसक्ति सम्पूर्ण कृति में बिखरी हुई–सी प्रतीत होती है। प्रत्येक कृति का कोई–न–कोई मूल उद्देश्य अवश्य होता है। इस संसक्ति के अंतर्गत विचारणीय विषय ये होता है कि–रचनाकार का मुख्य ध्येय क्या है?

इस प्रकार की संसक्ति संदर्भ, तर्क, वातावरण, प्रतीक, चरित्र, कथ्य आदि आयामों पर आधारित होती है।

सार्वत्रिक संसक्ति के इन्हीं आयामों के आधार पर महाकवि निराला और कविवर पंत के काव्य की तुलना इस प्रकार से की जा सकती है–

**क) सन्दर्भपरक संसक्ति :**
संदर्भ से सम्बन्धित वाक्य जब परस्पर जुड़े हों तो वहाँ संदर्भपरक संसक्ति विद्यमान होती है।

**डॉ. उषा सिंघल के शब्दों में** –'सन्दर्भपरक संसक्ति से अभिप्राय ऐसी संसक्ति से है, जिसमें पाठांश परस्पर संदर्भ के आधार पर संसक्त होते हैं।'[7] काव्य में ऐसी विशेषता कम ही दिखाई देती है। इसका कारण यह है कि–काव्य में संदर्भ से जुड़े वाक्य हमें एक साथ ही मिल जायें, ये आवश्यक नहीं। कवि अपना उद्देश्य भी सीधे–सीधे शब्दों में व्यक्त नहीं करते। अतः ये विशेषता काव्य की अपेक्षा नाटक, कहानी, उपन्यास जैसी गद्यात्मक विधाओं में अधिक होती है।

**ख) तर्कपूर्ण संसक्ति :**
तर्कपूर्ण संसक्ति की विशेषता भी काव्य की अपेक्षा गद्य में अधिक दिखाई देती है। जहाँ कोई पात्र मुख्य पात्रों (नायक–नायिका) से अलग अपना कोई विशेष स्थान बना लेता है, वहाँ इस प्रकार की संसक्ति होती है। काव्य में ये प्रवृत्ति गद्य की अपेक्षा कम होती है। इस कारण महाकवि निराला और कविवर पंत के काव्य में भी इस प्रकार की प्रवृत्ति अपेक्षतः कम दिखाई देती है।
पंत–कृत कुछ पंक्तियाँ इस प्रवृत्ति को लिये हुए हैं–

'तुच्छ सरट से उच्च ज्योति तक
एक सृष्टि सोपान निरंतर,
जटिल जगत्, गति गूढ़, मुक्त चिति,
तीनों सत्य, व्याप्त जगदीश्वर।'[8]

ये पंक्तियाँ पंत–कृत कविता 'प्रकाश पतिंगे छिपकलियाँ' की अंतिम पंक्तियाँ हैं। इस कविता का मुख्य उद्देश्य उस परमपिता परमात्मा की असीम सत्ता की शक्ति को व्यक्त करना है। ये ध्येय कविता के अन्त में 'जगदीश्वर' शब्द के प्रयोग से पूर्ण होता है। प्रकाश, पतंगें, छिपकलियों की विशेषताओं के बाद अन्त में परमात्मा की विशेषताएँ अपना अलग स्थान बनाती हैं। इस कारण यहाँ तर्कपूर्ण संसक्ति उत्पन्न होती है। निराला–कृत 'शुभ्र आनंद आकाश पर छा गया' नामक कविता की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं–

'किरण की मालिका पड़ी तनुपालिका
समीरण बहा समधीत।
कण्ठ रत पाठ में, हाट में, बाट में,
खुल गया ग्रीष्म या शीत।'[9]

ये कविता की अंतिम पंक्तियाँ हैं। अंत में ही पता चलता है कि निराला जी भारतीय ह्तुओं की विशेषता बताना चाहते हैं। इससे पूर्व कविता में इन मौसमों सम्बन्धी अनेक तर्क प्रस्तुत किये गये हैं। इस कारण यहाँ तर्कपूर्ण संसक्ति का गुण विद्यमान है। पंत–काव्य में यह संसक्ति स्पष्ट रूप में तथा निराला–काव्य में रहस्यात्मक रूप में दिखाई देती है।

**ग) वातावरण सम्बन्धी संसक्ति :**
प्रत्येक कृति में किसी–न–किसी प्रकार का वातावरण अवश्य होता है। इसी वातावरण से जुड़े हुये वाक्यों को वातावरण सम्बन्धी संसक्ति कहा जाता है। निराला और पंत काव्य में इस संसक्ति से जुड़ी विशेषता भिन्न–भिन्न रूपों में सर्वत्र दिखाई देती है। एक ही समय अथवा वातावरण का चित्रण दोनों महाकवियों ने अपने–अपने ढंग से किया है।

दोनों कवियों ने भगवान श्री राम के प्रति अपने मनोभाव व्यक्त किये हैं। निराला ने 'राम की शक्तिपूजा' तथा पंत ने 'मर्यादा पुरुषोत्तम के प्रति' नामक कविताओं में तत्कालीन वातावरण चित्रित किया है। निराला ने श्री राम को एक नवीन पुरुष के रूप में देखा है–

'होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन।
कह महाशक्ति राम के वन्दन में हुई लीन।'[10]

दूसरी ओर पंत ने श्रीराम के पौराणिक रूप का ही वन्दन किया है–

'जय पुरुषोत्तम! विश्व संचरण में धारण कर
विश्व श्याम तन, तुमने मन में किया अवतरण
प्रथम बार त्रेता युग में, मानव संस्कृति का
जो प्रोज्जवल निर्माण काल था, जब जन का मन
बहिर्जगत् में बिखरा था इंद्रिय द्वारों से।'[11]

निराला जी ने, युद्ध के समय श्री राम व रावण की क्या दशा थी? इसका वर्णन प्रत्यक्ष रूप से दूसरी ओर पंत ने परोक्ष रूप से उस समय का विवरण दिया है। इस प्रकार दोनों के काव्य में वातावरण सम्बन्धी संसक्ति के आधार पर भिन्नता है।

**घ) प्रतीक संसक्ति :**
काव्य–क्षेत्र में प्रतीक संसक्ति का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। कवि अपनी बात सीधे–सीधे न कह कर प्रतीकों के माध्यम से ही व्यक्त कता है। महाकवि निराला और कविवर पंत ने अपने काव्य में प्रतीकों को अपने–अपने ढंग से बड़े ही आकर्षक रूप में प्रयोग किया है। प्रतीकों के प्रयोग के अंतर्गत दोनों महाकवि सर्वश्रेष्ठ कहे जा सकते हैं। निराला–कृत पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

'भीख माँगता है अब राह पर
मुट्ठी भर हड्डी का यह नर।'[12]

यहाँ 'मुट्ठी भर हड्डी' शब्द भिखारी की शारीरिक दुर्बलता का प्रतीक है।
पंत–कृत 'युग–मन' कविता की आरंभिक पंक्तियों में प्रतीकात्मकता देखने योग्य है–

'अब मेघमुक्त होता युग मन।
अटपट पड़ते कवि छन्द चरण।'[13]

यहाँ 'मेघ' शब्द पुराने रीति–रिवाजों का प्रतीक है तथा दूसरी पंक्ति में भाषा के नियम–परिवर्तन की ओर संकेत किया गया है। दोनों महाकवियों के काव्य में प्रतीकात्मक संसक्ति भिन्न–भिन्न रूपों में सर्वत्र देखी जा सकती है।

**घ) चारित्रिक संसक्ति :**
किसी रचना के पात्रों के चरित्र की विशेषताएँ दर्शाने वाले वाक्यों में चारित्रिक संसक्ति विद्यमान होती है। निराला–कृत 'सरोज–स्मृति' तथा पंत–कृत 'समाधिता' और 'शशि की तरी' नामक कृतियों में यह विशेषता सरलता से देखी जा सकती है। निराला–कृत 'सरोज–स्मृति' कविता से कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

'उनविंश पर जो चरण प्रथम
तेरा वह जीवन, सिंधु–तरण
तनये, जी कर दृगपात तरुण
जनक के जन्म की विदा अरुण।
गीते मेरी, तज रूप–नाम
वर लिया अमर शाश्वत् विराम
पूरे कर शुचितर सपर्याय
जीवन के अष्ठादशाध्याय
चढ़ मृत्यु–तरणि पर तूर्ण चरण
कह 'पितः पूर्ण आलोक वरण
करती हूँ मैं यह नहीं मरण
सरोज का ज्योतिः शरण–वरण।'[14]

इस प्रोक्ति में महाकवि निराला ने अपनी पुत्री सरोज के प्रति अपने विचार व्यक्त किये हैं। यहाँ किसी–न–किसी रूप में सरोज के चारित्रित गुणों का आभास भी होता है। इसके अतिरिक्त परोक्ष रूप में नारी–जाति के प्रति कवि के विचार भी व्यक्त हुये हैं। दूसरी ओर पंत एक नन्हीं बच्ची के प्रति विचार व्यक्त करते हैं–

'अस्पफुट स्वर में तुम जाने
क्या कहतीं निःस्वर
फूल पंखुड़ियाँ सी
बरसा करती उर भीतर।'[15]

महाकवि निराला ने संस्कृतनिष्ठ शब्दावली के माध्यम से विचार व्यक्त किये हैं तथा कविवर पंत ने इसी प्रकार के भावों को सरल–स्पष्ट भाषा के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की है। भाषा के अतिरिक्त यहाँ दोनों महाकवियों के भावों में भी अन्तर दिखाई देता है। निराला की अपेक्षा पंत ने अधिक व्यक्तियों के चरित्र को उजागर किया है। 'रवीन्द्र के प्रति', 'बापू के प्रति', 'जवाहर के प्रति', 'भावी पत्नी के प्रति', 'कौए के प्रति', 'बुद्ध के प्रति', 'मर्यादा पुरुषोत्तम के प्रति' आदि अनेक कविताओं में चारित्रिक संसक्ति का गुण सरलता से देखा जा सकता है।

**च) कथ्यात्मक संसक्ति :**
रचना की मुख्य कथा से जुड़े हुये वाक्यों के समूह में कथ्यात्मक संसक्ति का गुण विद्यमान होता है। संसक्ति का यह गुण काव्य ही अपेक्षा गद्य में अधिक होता है। इसका कारण ये है कि कविता में संसक्त कथा का अभाव होता है। निराला–कृत 'बादल–राग' तथा पंत–कृत 'बादल' कविताएँ कथ्यात्मक संसक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण हो सकती है। दोनों कविताओं में कवियों ने 'बादल' को सम्बोधित किया है। यहाँ अन्तर ये है कि–दोनों कवियों का तरीका भिन्न–भिन्न है। निराला जी ने बादलों के रौद्र–रूप को व्यक्त किया है तो दूसरी ओर कविवर पंत ने बादलों की विशेषताएँ प्रकट करते हुए उसे बरसने का आदेश दिया है। दोनों कवियों का बादल को आदेश करने का तरीका भी भिन्न है। इसके अतिरिक्त कहीं निराला ने प्रतीकों के माध्यम से कथ्य स्पष्ट किया है तो कहीं पंत ने बिम्बों का सहारा लिया है।

बादलों के बरसने के प्रभावों को दोनों कवियों ने भिन्न–भिन्न ढंग से व्यक्त किया है। निराला कहते हैं–

'ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल!
फिर–फिर
बार–बार गर्जन
वर्षण है मूसलाधार
ह्रदय थाम लेता संसार,
सुन–सुन घोर वज्र हुंकार।'[16]

दूसरी ओर पंत का कहना है–

'जलाशयों में कमल दलों सा
हमें खिलाता नित दिनकर
पर बालक सा वायु सकल दल
बिखरा देता चुन सत्वर।'[17]

इस प्रकार कथ्यात्मक संसक्ति के आधार पर निराला और पंत के काव्य में काफी अन्तर देखा जा सकता है।

**निष्कर्ष :**
प्रोक्ति के आधार पर महाकवि निराला और कविवर पंत के काव्य में अधिकतर समानताएँ ही दृष्टिगोचर होती हैं। परन्तु कहीं–कहीं इनके काव्य में भिन्नता भी दिखाइ देती है। दोनों महाकवियों ने अपने–अपने तरीके से वाक्यों को संसक्त कर मनोभावों को सुन्दर अभिव्यक्ति प्रदान की है। यदि संसक्ति के नवीन आयामों के आधार पर दोनों महाकवियों के काव्य की तुलना की जाये तो कापफी अन्तर दिखाई देता है। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि का दोनों महाकवियों ने भिन्न–भिन्न ढंग से प्रयोग किया है। काव्य के तत्त्व दोनों महाकवियों के काव्य में भिन्न–भिन्न रूपों में देखे जा सकते हैं। अतः इस प्रकार प्रोक्ति के आधार पर निराला और पंत के काव्य का अध्ययन–विश्लेषण किया जा सकता है।

**संदर्भ सूची :**

1. भोलानाथ तिवारी, शैलीविज्ञान, पृ. 9
2. नगेन्द्र, शैलीविज्ञान, पृ. 16
3. डॉ. हेतु भारद्वाज (संपादक), पंचशील शोध समीक्षा, पृ. 8
4. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', गीतिका, पृ. 7
5. सुमित्रानंदन पंत, स्वर्णकिरण, पृ. 113
6. नन्दकिशोर नवल (संपादक), असंकलित कविताएँ, पृ. 43
7. उषा सिंघल, शैलीविज्ञान और नाटक, पृ. 33
8. सुमित्राानंदन पंत, अतिमा, पृ. 62
9. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', बेला, पृ. 17
10. रामविलास शर्मा (संपादक), रागविराग, पृ. 104
11. कुमार विमल (चयन एवं संपादन), सुमित्रानंदन पंत रचना संचयन, पृ. 231
12. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', बेला, पृ. 61
13. सुमित्रानंदन पंत, उत्तरा, पृ. 89
14. रामविलास शर्मा (संपादक), रागविराग, पृ. 54
15. कुमार विमल (चयन एवं संपादन), सुमित्रानंदन पंत रचना संचयन, पृ. 56
16. रामविलास शर्मा (संपादक), रागविराग, पृ. 55
17. कुमार विमल (चयन एवं संपादन), सुमित्रानंदन पंत रचना संचयन, पृ. 52